Since March 2002
A National, Registered, Peer Reviewed & Refereed Monthly Journal
Sanskrit Literature
Research Link - 175, Vol - XVII (8), October - 2018, Page No. 95-97
ISSN - 0973-1628 ■ RNI - MPHIN-2002-7041 ■ Impact Factor - 2015 - 2.782

कथासरित्सागर में तन्त्रशास्त्र का अध्ययन

प्रस्तुत शोधपत्र के अंतर्गत कथासरित्सागर में तन्त्रशास्त्र का अध्ययन किया गया है। इसमें तन्त्र-मन्त्र जैसी विधाओं का अध्ययन किया गया है तथा विभिन्न प्रकार के जादू-टोना एवं अंतरिक्ष में आवागमन करने वाली शक्तियों का आध्यात्मिक दृष्टिकोण के आधार पर विश्लेषणात्मक अध्ययन किया जाना दृष्टव्य रहा है तथा कथासरित्सागर में महाकवि पण्डित सोमदेव भट्ट द्वारा यक्ष-यक्षणी, विद्याधर-विद्याधरी, निशाचर-निशाचरी आदि अनेकानेक मनीषियों द्वारा विद्याओं का प्रयोग किया जाता है तथा शोधपत्र में तन्त्रशास्त्र की उपयोगिता, प्राचीन भारतीय समाज में तन्त्रशास्त्र के बीज वैदिक संदर्भ में, तन्त्रशास्त्रीय विद्या के प्रकारों में रुप परिवर्तित करने वाली विद्या, आकाश में विचरण करने योग्य विद्या, युद्ध क्षेत्र में प्रयुक्त करने योग्य विद्या और वशीकरणीय विद्या आदि का सम्बंध तन्त्रशास्त्र से सम्बद्ध या निबद्ध किया जा सकता है।

कुँजी शब्द : तन्त्रशास्त्र, वशीकरणीय, आदिभौतिक, आदिदैविक, ऐतिहासिक, आकशचरी, कालरात्रि।

सुन्दरलाल अहिरवार* एवं डॉ.एस.एस.गौतम**

तन्त्रशास्त्र की उपयोगिता :

प्रस्तुत शोध–पत्र के अन्तर्गत कथासरित्सागर में तन्त्रशास्त्र का अध्ययन से सम्बन्द्ध उसकी उपयोगिता पर प्रकाश डाला गया है, जिसमें तन्त्रविद्या के आधार पर विभिन्न आवश्यकताओं की पूर्ति की जाती रही है, जो मानव को तन्त्र विद्या के गुणों से अवगत कराने का प्रयास करती है तथा तन्त्रशास्त्र के माध्यम से मानव विभिन्न विद्या–कलाओं का सृजन करता आया है। प्राचीनकाल से संस्कृत साहित्य के ऐतिहासिक दृष्टिकोण में मन्त्रशास्त्र की परिकल्पना का कल्पित प्रयोग किया जाना सुनिश्चित रहा है, क्योंकि तन्त्रशास्त्र की उपयोगिता को ध्यान में रखते हुए प्राचीन ऋषि मनीषियों ने तन्त्र विद्या का प्रचलन उन आदिभौतिक एवं आदिदैविक शक्तियों को संगठित करने के लिए उपयोग किया जाता था, जिसके आधार पर तन्त्रशास्त्र का ज्ञाता अथवा तन्त्रशास्त्र का विद्याधर एवं विद्वान अपनी शक्ति के आधार पर किसी भी प्रकार का रूप परिवर्तन कर सकता है, आकाशचरी हो सकता है एवं युद्ध क्षेत्र में अपनी विद्या के बल पर शत्रु को परास्त कर सकता है तथा किसी भी प्राणी को अपने अधीन कर सकता है, यथा–

तद्बुद्ध वा स ततस्तस्मै सानुकम्पो द्विजोत्तमः।
अग्नेराराधनं मन्त्रं ददावीप्सितसिद्ध ये।।[2]

इस प्रकार से महाकवि सोमदेव के ग्रंथ कथासरित्सागर में मन्त्रों की उपयोगिता का दृष्टान्त व्यक्त किया जा रहा है, जिसमें एक बुद्धिमान वृद्ध दयालु ब्राह्मण द्वारा अग्नि की उपासना का मन्त्र दिया जाता है, जिससे उस उपासक की मनोकामना पूर्ण होगी। यह आस्वासन दिया जाता है तथा उसकी आवश्यकता भी पूर्ण हो जाती है।

तन्त्रशास्त्रीय विद्या के प्रकार :

तन्त्रशास्त्रीय विद्याओं के विभिन्न प्रकार के मतों को विद्वानों एवं मनीषियों ने व्यक्त किए हैं, जिसमें रूप परिवर्तित करने की विद्या, आकाश में उड़ने की विद्या, आकाश से नीचे उतरने की विद्या, युद्ध क्षेत्र में प्रयोग करने योग्य विद्या, वशीकरणीय एवं राक्षसों का नाश करने वाली विद्या आदि तान्त्रिक विद्याओं का उल्लेख कथासरित्सागर नामक ग्रंथ में वर्णित किया गया है।

(क) रूप परिवर्तित करने की विद्या : कथासरित्सागर ग्रंथ में तन्त्रशास्त्रीय विद्या का उल्लेख वर्णित किया गया है, जिसमें रूप को परिवर्तित करने की विद्या का भी अध्ययन कथासरित्सागर में प्रस्फुटित किया गया है। यथा–

मनुष्यकन्यकाभावमाश्रित्याश्वासकारणम्।
सास्याः कलिङ्गसेनायाः शनैरुपस सर्प च।।[3]

इस प्रकार से मनुष्यरूपी कन्या का रूप परिवर्तित करके सोम प्रभा धीरे–धीरे कलिंग सेना नाम की राजकुमारी के पास पहुँच गयी। अतः इस प्रकार का दृष्टान्त भी कथासरित्सागर ग्रंथ के अध्ययन से विदित किया गया है, कि इसमें तन्त्रशास्त्र विद्याओं का उल्लेख कथित किया गया है।

(ख) आकाश अथवा अन्तरिक्ष में उड़ने की विद्या : कथासरित्सागर में तन्त्रशास्त्र के अध्ययन से सम्बन्धित विभिन्न तन्त्रशास्त्रीय विद्याओं में अन्तरिक्ष में उड़ने की विद्या का भी उल्लेख किया जा सकता है, क्योंकि इस तन्त्र–मन्त्र विद्या के प्रभाव से मानव जाति या विद्याधर जाति के लोगों द्वारा अन्तरिक्ष में उड़ जाता है। वह एक स्थान से दूसरे किसी भी नये स्थान पर जाने में समर्थ हो जाता है। यथा–

अथोत्पतनमन्त्रं सा पठित्वा ससखीजना।
कालरात्रिः सगोवाटहर्म्यैवोदपतन्नभः।।
तं च मन्त्रं स जग्राह श्रुत्वा सुन्दरकस्तदा।
सहर्म्या सापि नभसा क्षिप्रमुज्जयिनीं ययौ।।[4]

**शोधछात्र **प्राध्यापक (संस्कृत विभाग), शासकीय महाकौशल कला और वाणिज्य महाविद्यालय, जबलपुर (मध्यप्रदेश)*

इस प्रकार विष्णुदत्त की पत्नि डाइन सहेलियों के साथ उस कालरात्रि ने उड़ने का मन्त्र पढ़ा और गौओं के बाड़े के सहित उड़कर आकाश–मार्ग से उज्जयिनी चली गयी। उसी समय सुन्दरक नामक शिष्य ने उसके मन्त्र को जान लिया था, इसलिये कथासरित्सागर में तन्त्रशास्त्र का अध्ययन अति उल्लेखनीय तथ्य रहा है।

(ग) अन्तरिक्ष से नीचे उतरने की विद्या : कथासरित्सागर में तन्त्रशास्त्र के अध्ययन से सम्बन्धित विभिन्न तान्त्रिक विद्याओं में अन्तरिक्ष से नीचे की ओर उतरने योग्य विद्या के प्रभाव का भी उल्लेख प्रस्फुटित किया गया है, जिसके आधार पर मानव द्वारा आकाश मार्ग में उड़ने पर किसी भी यन्त्र को नीचे की ओर उतरा जा सकता है। यथा–

अथैकदा ददौ तस्मै मन्त्रं व्योमावरोहणे।
सिद्धः कोऽपि किलाकाशचारी सञ्जातसंस्तवः।।
प्राप्तावतारमन्त्रः स गत्वा सुन्दरकस्ततः।
कान्यकुब्जे निजे देशे व्योममार्गादवातरत्।।[5]

इस प्रकार से एक बार, किसी आकाशचारी सिद्ध ने, उसकी स्तुति से प्रसन्न होकर उसे आकाश से नीचे उतरने का मन्त्र भी दे दिया। तब उतरने का मन्त्र प्राप्त कर वह सुन्दरक उड़कर अपने देश कान्यकुब्ज (कन्नौज) में उतरा।

अतः महाकवि पण्डित सोमदेव भट्ट की कृति कथासरित्सागर में तन्त्रशास्त्रीय विद्या का उल्लेखनीय वर्णन प्रस्फुटित किया गया है।

इस प्रकार से इस श्लोक के माध्यम से यह स्पष्ट किया जा सकता है कि प्राचीन काल में आकाश में उड़ने एवं नीचे उतरने की तन्त्रशास्त्रीय विद्याओं का प्रयोग किया जाता रहा है, जिसे वर्तमानकालीन समय में ग्रन्थों के माध्यम से जानने का प्रयास किया जाता है।

(घ) युद्ध क्षेत्र में प्रयोग करने योग्य विद्या : शोध–पत्र के कथासरित्सागर में तन्त्रशास्त्र का अध्ययन से सम्बन्धित विद्या के विभिन्न भेदों में युद्ध क्षेत्रीय तन्त्र–मन्त्र विद्या के प्रभाव का उल्लेखनीय वर्णन व्यक्त किया गया है, क्योंकि ऐसी विद्याओं के द्वारा युद्ध कौशल में भी विजय प्राप्त की जा सकती है। यथा–

ततस्तेन समं भ्रात्रा युद्धं विद्यावलोद्धतम।
वेगवत्या अभूत्स्त्रीणां पतिः प्राणा न वान्धवाः।।[6]

इस प्रकार से जब वेगवती का भाई मानसवेग उन दोनों नरवाहनदत्त और वेगवति को मारने के लिए दौड़ा। तब उस समय अपने भाई के साथ वेगवती का विद्याबल से भयंकर युद्ध हुआ, क्योंकि स्त्रियों के लिए पतिदेव प्राण होते हैं, बन्धु–बान्धव नहीं। महाकवि सोमदेव के ग्रन्थ कथासरित्सागर में तन्त्रशास्त्र के अध्ययन में व्यक्त किया गया है, कि विद्याबल का प्रयोग युद्ध क्षेत्र में भी किया जाता रहा है।

(ड़) अदृश्य होने योग्य विद्या : तन्त्रशास्त्र के अन्तर्गत विभिन्न विद्याशास्त्रों में अदृश्य होने की विद्या का भी उल्लेखनीय वर्णन किया जा सकता है, क्योंकि इस विद्या के बल पर तान्त्रिक कभी–कभी अदृश्य भी हो जाता है। यथा–

कुपिते च नृपे तस्याः कर्णौ च च्छेत्तुमुद्यते।
सा गृही तापि पश्यत्सु सर्वेष्वेव तिरोदधे।।[7]

इस प्रकार से जब राजा के कुपित होने पर कालरात्रि नाम की स्त्री के कान कटाने के लिए जैसी उद्यत हुआ, वैसे ही सबके देखते–देखते पकड़ी हुई कालरात्रि अदृश्य हो गयी, क्योंकि कालरात्रि के पास अदृश्य होने की तान्त्रिक विद्या थी, इसीलिए वह अपने आपको बचाने के लिए अदृश्य हो गयी थी।

इन्हीं तथ्यों को ध्यान में रखते हुए संस्कृत साहित्य के प्राचीन ऋषि–मनीषियों ने यह व्यक्त किया था कि कथासरित्सागर ग्रन्थ में अदृश्य होने की विद्या के साथ–साथ विभिन्न तान्त्रिक विद्याओं का उल्लेखनीय वर्णन प्रस्तुत किया गया है।

(च) वशीकरणीय एवं राक्षसों का नाश करने की विद्या : तन्त्रशास्त्रीय अध्ययन से सम्बन्धित विभिन्न तान्त्रिक विद्याओं में वशीकरणीय एवं राक्षसों का नाश करने वाली विद्या का भी उल्लेख महाकवि पण्डित सोमदेव के ग्रन्थ कथासरित्सागर में विश्लेषित किया गया है, जिसके माध्यम से मानव राक्षसों को वश में कर सकता था तथा राक्षसों का विनाश भी इस विद्या के प्रभाव से किया जाता था। ऐसा उल्लेखनीय वर्णन व्यक्त किया गया है। यथा–

तं दृष्ट्वा तादृशीं तत्र कालरात्रिमुपागताम्।
सस्मार मन्त्रान् रक्षोध्नान् भीतः सुन्दरकोऽथ सः।।
तन्त्रमन्त्रमोहिता चाथ तं ददर्श न सा तदा।
भय सम्पिण्डितैरङ्गैरेकान्ते निभृतस्थितम्।।[8]

इस प्रकार से आई हुयी कालरात्रि को देखकर डरा हुआ सुन्दरक राक्षसों का विनाश करने वाली विद्या का मन्त्र जाप करने लगा तथा उसके मन्त्र जाप से मोहित कालरात्रि ने भय से एक कोने में सिकुड़े हुए उसे नहीं देखा। अर्थात् इस प्रकार की विद्या के प्रभाव से किसी प्राणी को अपने वशीभूत किया जा सकता है तथा दुराचारी राक्षसों का विनाश किया जा सकता है। ऐसा प्राचीन संस्कृत साहित्य के तान्त्रिक ऋषि–मनीषियों का मत रहा है। इन मनीषियों में दैत्य गुरु शुक्राचार्य, देव गुरु ब्रहस्पति, महर्षि वेदव्यास, आदिकवि श्री वाल्मीकि तथा चाणक्य आदि अनेकानेक मनीषियों ने अपने मत प्रकट किए हैं।

प्राचीन भारतीय समाज में तन्त्रशास्त्र के बीज–वैदिक सन्दर्भ में :

संस्कृत साहित्य में प्राचीन भारतीय समाज का उल्लेखनीय वर्णन किया गया है, जिसमें प्राचीन संस्कृत साहित्य के ऋषि–मनीषियों ने अपने मत प्रकट करते हुए यह व्यक्त किया था, कि प्राचीनकाल में भारतीय समाज तान्त्रिक विद्या का अध्ययन करता आया है, जिसके आधार पर मानवीय समाज में तन्त्रशास्त्र के बीज का अंकुरण प्रकट हुआ है तथा वेदों से लेकर पुराणों, उपनिषदों, ब्राह्मण ग्रन्थों, आरण्यकों, रामायण, महाभारत और कथासरित्सागर आदि ग्रन्थों में तन्त्रशास्त्र के बीज तथा उसके अंकुरण होने का सात्विक उल्लेखों को प्रदर्शित किया गया है।

संस्कृत साहित्य के वैदिक ऋषि–मनीषियों में आचार्य बृहस्पति, आचार्य शुक्राचार्य, आचार्य दुर्वासा, आचार्य कण्व ऋषि, महर्षि अगस्त, महर्षि भारद्वाज, महर्षि मतंग, महर्षि याज्ञवल्क्य, श्रृंगऋषि, राजर्षि विश्वामित्र, महर्षि वेदव्यास और आदिकवि वाल्मीकि जी वैदिक कालीन समय के तन्त्रशास्त्री रहे हैं, जिन्होंने भारतीय समाज में तन्त्रशास्त्र के बीजों का अंकुरण बोया है जो आधुनिक काल में भी अध्ययन करने के लिए लेखांकित किया गया है। यथा–

मन्त्रग्रामं गृहाण त्वं बलामतिबलां तथा।
न श्रमों न ज्वरो वा तेन न रुपस्य विपर्ययः।।[9]

इस प्रकार 'बला और अतिबला' नाम से प्रसिद्ध इस मन्त्र

समुदाय को गृहण करो। इसके प्रभाव से तुम्हें कभी श्रम (थकावट) का अनुभव नहीं होगा। ज्वर रोग एवं चिन्ताजनित कष्ट नहीं होगा। तुम्हारे रूप में किसी प्रकार का विकार या उलट–फेर नहीं होने पायेगा। यह कथन राजर्षि विश्वामित्र, रामचन्द्र से व्यक्त करते हैं।

एतद्विद्याद्वये लब्धे न भवेत् सदृशस्तव।
बला चातिबला चैव सर्वज्ञानस्य मातरौ।।(10)

इस प्रकार से इन दोनों विद्याओं के प्राप्त हो जाने पर कोई तुम्हारी समानता नहीं कर सकेगा, क्योंकि ये बला और अतिबला नामक विद्यायें सब प्रकार से ज्ञान की जननी हैं। अर्थात् तन्त्रशास्त्र की विद्याओं में बला एवं अतिबला जैसी विघ्न–बाधाओं को दूर करने वाली शक्तियाँ सम्पूर्ण ज्ञान कोश का भण्डार कहीं जा सकती है। इसीलिये प्राचीन–मनीषियों ने भारतीय समाज में तन्त्रशास्त्र के बीज का उन्मूलन किया है जिसके आधार स्वरूप प्रत्येक कार्य को करने में वह मानव को सक्षम बनाती है।

निष्कर्ष :

प्रस्तुत शोध–पत्र के विषयान्तर्गत 'कथासरित्सागर में तन्त्रशास्त्र का अध्ययन'' इसमें तान्त्रिक विद्या की उपयोगिता, तन्त्रशास्त्र की भूमिका, तन्त्रशास्त्र विद्याओं के प्रकार जिनमें रूप परिवर्तित करने की विद्या, अदृश्य होने की विद्या, अन्य प्राणियों को वश में अथवा अपने वशीभूत करने की तन्त्रशास्त्रीय विद्या का मूल्यांकन एवं विश्लेषण करने का प्रयास किया गया है एवं कथासरित्सागर में तन्त्रशास्त्र का उल्लेख प्रकट करने पर प्रकाश डाला गया है।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट किया जा सकता है कि कथासरित्सागर नामक ग्रंथ में तन्त्रशास्त्र के तत्त्वों का होना विदित किया गया है। तथा भारतीय समाज में तन्त्रशास्त्र के बीज का अंकुरण वैदिक साहित्य में वर्णित किया गया है।

संदर्भ :

(1) कथासरित्सागर मंगलाचरण, पृष्ठ 1.

(2) *कथासरित्सागर, प्रथमखण्ड, तृतीय लम्बक, श्लोक 97, पृष्ठ 290.*

(3) *कथासरित्सागर, प्रथमखण्ड, षष्ठ लम्बक, द्वितीय तरंग, श्लोक 106, पृष्ठ 642.*

(4) *कथासरित्सागर, प्रथमखण्ड, तृतीय लम्बक, षष्ठ तरंग, श्लोक 140–141, पृष्ठ 392.*

(5) *कथासरित्सागर, प्रथमखण्ड, तृतीय लम्बक, षष्ठ तरंग, श्लोक 179–180, पृष्ठ 398.*

(6) *कथासरित्सागर, प्रथमखण्ड, चतुर्दश लम्बक, प्रथम तरंग, श्लोक 87, पृष्ठ 734.*

(7) *कथासरित्सागर, प्रथमखण्ड, षष्ठ तरंग, तृतीय लम्बक, श्लोक 184, पृष्ठ 398.*

(8) *कथासरित्सागर, प्रथमखण्ड, तृतीय लम्बक, षष्ठ तरंग, श्लोक 138–139, पृष्ठ 392.*

(9) *श्रीवाल्मीकि रामायण, वालकाण्ड, द्वाविंशः सर्गः श्लोक 13, पृष्ठ 109.*

(10) *श्रीवाल्मीकि रामायण, बालकाण्ड, द्वाविंशः सर्गः श्लोक 17, पृष्ठ 110.*

❁❁